वार्षिक मूल्य 50 रूपये

धर्म जीवन

जून – जुलाई – 2017

* सेवक के सन्मान में देवात्मा का सन्मान भी निहित है
* भगवान देवात्मा का एक उपदेश
* भविष्यवाणियों के आईने में नज़र आता भ्रम
* धर्म में फंसाने का धंधा
* जीवन प्रसंग
* शुभ संग्राम

अंह अनुराग से क्या मुराद है?

अपनी 'मैं' का प्रबल पक्षपात को अंह अनुराग कहते हैं: -

* जिस इन्सान के भीतर अंह अनुराग अधिक मात्रा में बढ़ता जाता है, उतना ही वह झूठ के साथ भरा रहता है।

* अपनी बढ़ी हुई "मैं" का जो प्यार है, वही घमंड भाव कहलाता है। जहां कहीं मनुष्य किसी से, अपने आपको झूठ झूठ बड़ा और बढ़िया मानता है, अपने आपको झूठ झूठ बड़ा या बढ़िया ज़ाहिर करता है, या बड़ा या बढ़िया विश्वास करता है, तब उसकी ऐसी हालत घमंड की हालत कहलाती है।

* नेचर का यह नियम है, कि जिन लोगों में यह नीच सुख मनुराग जिस कदर अधिक मात्रा में पाए जाएंगे, उसी क़दर वह घटिया और कमज़ोर पाए जाएंगे और जिनमें यह नीच सुख अनुराग कम होंगे, वह उसी क़दर बढ़िया और ताक़तवर मिलेंगे।

* घमंडी, स्वार्थी, स्वेच्छाचारी और नीच घृणाकारी जनों का धर्म राज में प्रवेश नहीं हो सकता।

* सेवक सेविकाओं में जो जन अधिक घमंड अनुरागों के अधीन होते हैं, वह देवात्मा को अपना गुरू कहकर भी, उनकी पुस्तकों का अध्ययन करना नहीं चाहते और नहीं करते, उनको ऐसा करने में सुख नहीं मिलता। वह देवात्मा की रहनुमाई को कबूल करना नहीं चाहते। वह यदि कभी उनकी पुस्तकों का पाठ करते भी हैं, उन्हें उनमें रस नहीं मिलता। रोशनी क्यों नहीं मिलती। रोशनी पाने के अटल नियम हैं, जब तक वह पूरे न हों रोशनी नहीं मिल सकती।

* घमंडी जन स्वंय पथ भ्रष्ट और भ्रान्त होकर भी अपने आपको ठीक ठाक, बड़ा और बढ़िया समझता है।

* घमंडी इन्सान अपने जीवन से घमंड के लक्षण प्रगट करता रहता है, चाहे उसे अपने अन्दर के घमंड की वर्तमानता का कुछ पता हो या न हो।

* घमंडी इन्सान की मर्जी के विरूद्ध जब कोई बात होती है तो वह आम करके, किसी बड़े से बड़े की भी परवाह नहीं करता देखा जाता।

* घमंडी और स्वेच्छाचारी जन आपस में मिलकर किसी अच्छे काम को पूरा करने के लिए, एक समूह या जत्था नहीं बन सकते। जहां "मैं" है वहां गठन या जत्था कहां?

* जब घमंड पर चोट लगती है, और नीच घृणा पैदा होती है, तो कैसा ही मुबारक काम क्यों न हो, एक एक जन झट उसे छोड़कर भाग जाता है।

* ऐसी सूरत में जब दिनों दिन, उसके भीतर भलाई का भाव नहीं बढ़ता, तब वह सोचे कि उसे कौन सी चीज़ चला रहीं है? यदि उसे अपना अंह, मान, बडाई इज्जत वा पद आदि चला रहे हैं, तो कुछ दिन बाद वह रह जाएगा और उसका सारा काम बन्द हो जाएगा। घमंड ओर घृणा मनुष्य के महा पतनकारी और महा नीच भाव हैं।

(परलोक वास श्रीमान निर्मल सिंह जी की डायरी से)

धर्म जीवन

खण्ड 30 अंक 6 – 7
जून – जुलाई 2017
वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

सेवक के सन्मान में देवात्मा का सन्मान भी निहित है

अपने साथी सेवक के प्रति सन्मान व्यक्त करने या सन्मान प्रदर्शन करने में देवात्मा सत्गुरू का सन्मान भी जुड़ा है। जो सेवक का सन्मान करता है, वह उसके साथ अप्रत्यक्ष रूप से देवात्मा का सन्मान भी करता है। जो साथी सेवक के प्रति सन्मान रहित व्यवहार देता है, उसका अपमान करता है, उसको तुच्छ और हेय समझता है, वह हकीकत में देवात्मा गुरु के प्रति भी सही अर्थों में सन्मान नहीं रख सकता है। यह गहरी सोच का विषय है।

पहली श्रेणी के प्रतिज्ञा पत्र में ही प्रत्येक सेवक के लिए सन्मान सम्बन्धी प्रतिज्ञा रखी गई है। जिसका अर्थ है कि उस प्रतिज्ञा को बुरी तरह भंग करने वाला सेवक ही नहीं रहता और सेवक बनने के महानतम अधिकार को खो बैठता है।

सेवक कौन हो सकता है? सेवक बनने और रहने के लिए कम से कम दो शर्तें ज़रूरी हैं। पहली और अति मुख्य शर्त तो यह है कि प्रत्येक सेवक पक्के तौर पर, मिथ्या गुरुओं या देवी देवताओं या मिथ्या उपास्यों के प्रति कोई विश्वास न रखता हो और देवात्मा को ही एक मात्र सच्चे देव विश्वास करता हो। उनको एक मात्र रूहानी ज्योति और तेज के दाता, एक मात्र सत्य धर्म शिक्षक और आत्मा का हर प्रकार के हितकर्ता विश्वास करता हो। सेवक के लिए एक ओर देवात्मा का विश्वासी और मिथ्या उपास्यों, पूजा पाठों से मुक्त होना, अति आवश्यक है। दूसरी ओर इस अवस्था के कारण वह सदा सत्कार की चीज़ है। देवात्मा का नाम लेने वाला और विश्वासी इस नारकीय संसार में बहुत दुर्लभ है। इसलिए सदा ही सत्कार के योग्य है।

सेवक होने या बने रहने की दूसरी विशेष शर्त यह है कि वह नीयत आठ पापों से पूर्ण बचा हो और इन पापों से सदा बचे रहना चाहता हो यह दूसरी पक्की शर्त है कि जो प्रत्येक सेवक को सदा पक्की रखना जरूरी है। देवात्मा विश्वासी होकर परन्तु उक्त पापों में कुछ एक का कर्ता होकर कोई सेवक नहीं रह सकता है। इसी प्रकार उक्त पापों से मुक्त रहकर परन्तु देवात्मा का विश्वासी न होकर कोई मनुष्य देवात्मा का सेवक नहीं रह सकता।

उक्त विश्वास सम्बन्धी और मोटे पापों सम्बन्धी प्रतिज्ञाओं को पूरा करना विशेष महत्व रखता है, इसलिए वह जन सब सेवकों के सन्मान का पात्र

बन जाता है।

जो सेवक किसी भी साथी सवेक का सन्मान नहीं करते या अपमान करते हैं, वह सेवक होने के अपने कर्तव्य को न केवल पूरा नहीं करते, बल्कि ऐसा करके अपने जीवन को दोष पूर्ण और विकास युक्त बनाते हैं और महा हानि के राह पर पड़ जाते हैं।

साथी सेवक को देखकर देवात्मा विश्वासी और आठ पाप त्यागी की सुन्दर मूर्ति सामने आनी चाहिए और उसके आगे सिर झुकना चाहिए। सेवक को देखकर गुरु की और धर्म जीवन की याद आती है, अपने कर्त्तव्य का विवेक जागता है, इसलिए सेवक को सन्मान देना न केवल आवश्यक है, बल्कि बरकतों का दाता है।

किसी साथी सेवक को कैसे सच्चा सन्मान देना चाहिए इसकी सुन्दर उदाहरणें समाज में पर्याप्त मात्रा में हैं। हमारी साथी सेवकों के सम्बन्ध में क्या अवस्था है, इसका एक स्मरण योग्य उदाहरण यह है।

सरदार साहिब सरदार सावन सिंह जी चौथी श्रेणी के विशेष सेवक थे। वह तहसीलदार थे। उच्च पद रखते थे। उनके पास दलित श्रेणी के आठवीं पास अध्यापक, जो सेवक थे, गए । सरदार साहिब उस समय कचहरी लगाकर बैठे थे। मिसलें पेश हो रही थी। मुन्शी, रीडर और सायल हाज़िर थे। इस समय गुरु सेवक के आते ही उन्होंने कहा कि चन्द मिन्ट काम रोक दो, मुझे मिलने वाले जन आ रहे हैं। मैं अभी आकर आगे का काम शुरू करूंगा।

सरदार साहिब उठे, दफतर के बाहर आकर साथी सेवक के दर्शन करते ही निहाल हो गए। उनको प्रणाम किया, उनकी परिक्रमा की और साथ साथ यह वाक्य उच्चारते गए "जिथे मिले गुरू सिखड़ा, झुक झुक लागूं पाए।"

साथी सेवक के लिए हमारा इस प्रकार का आर्दश सन्मान होना चाहिए। इससे हम स्वंय भी महान बनते हैं और उच्च बरकतों को प्राप्त होते हैं।

हमने देखना है कि किसी साथी सेवक को सन्मान करने में देवात्मा गुरु का सन्मान कैसे निहित है?

सेवक का रूप जो सन्मान का अधिकारी है, वह सेवकी से पहले उसको प्राप्त नहीं था। वह नया प्राप्त हुआ है। उसमें विशेष परिवर्तन आया है। यह परिवर्तन सेवक के भीतर देवात्मा के प्रभाव पैदा करते हैं। गुरु की अति दुर्लभ महा विचित्र और महा हितकर ज्योति शक्ति पैदा करती है। जिस मात्रा में कोई जन देवात्मा के अद्वितीय प्रभाव प्राप्त करता है, उसी मात्रा में उसके जीवन में अवश्य सुन्दर परिवर्तन पैदा होता है, जो उसे नया रूप प्रदान करता है। हमारा सन्मान सेवक के भीतर पैदा हुए नव जीवन के लिए है। देवात्मा के पैदा किए हुए कार्य के लिए है, जितने कोई अद्वितीय देव प्रभाव प्राप्त करता है, उतना ही वह अधिक हमारे सन्मान का पात्र है। जब और जितना हम उस परिवर्तन को प्रणाम करते हैं, वास्तव में उतना ही हम देवात्मा के अद्वितीय कार्य को प्रणाम करते हैं, देवात्मा का सन्मान करते हैं।

यदि सेवक के सामने आने से उसका परिवर्तन हमें झुकाता नहीं, तो हमारे भीतर उसके लिए सन्मान नहीं। ऐसी सूरत में हम देव प्रभावों और उनके कारज का, अर्थात देवात्मा का भी निरादर करने के भागी बनते हैं।

इसलिए साथी सेवक का सच्चा सन्मान देवात्मा का भी सन्मान है। साथी सेवक का निरादर देवात्मा का निरादर है, उसको अलग नहीं किया जा सकता। प्रत्येक सेवक कुछ न कुछ अंश गुरु के रंग में रंगा जाता है, इसलिए उसका सन्मान आवश्यक है, नहीं तो गुरु का और कारज का निरादर है।

हम मनुष्य हैं, दुख सुख को लेकर चलते हैं। प्राय: यदि किसी सेवक की चाल, रहन सहन हमारी इच्छा हमारे सन्मान, हमारी रुचि, हमारी सोच, हमारी चाल, हमारी पालिसी, हमारी अधीनगी के अनुकूल नहीं, तो स्वभाविक ही वह सेवक हमारी नजरों से गिर जाता है, और उस के प्रति हम अपना सन्मान खो बैठते हैं।

उसके भीतर गुरु के प्रभावों का सुन्दर से सुन्दर कार्य भी हमारे सामने फीका पड़ जाता है, और हम उस सेवक को किसी गिनती में शुमार नहीं करते। यहां बहुत बड़ी उलझन का शिकार हो जाते हैं। अपने और दूसरों के नाश के मार्ग को खुशी खुशी अपना लेते हैं। हमारी पसन्द और ना पसन्द के साथ किसी साथी के भीतर आया हुआ परिवर्तन बन्द नहीं हो जाता। हमारा साथी सेवकों के प्रति सन्मान, हमारे निज सुख के अनुकूल हरगिज़ हरगिज़ नहीं हो जाना चाहिए। यह हमारी सुख - अनुरागी प्रकृति जो हमें आत्मघाती सोच का शिकार बनाती है, वह महा भयानक है, महा हानिकारक है।

साथी सेवक अपने जीवन के स्तर के विचार से छोटे बड़े भी होते हैं, परन्तु प्रत्येक सेवक अपने अन्दर आए हितकर परिवर्तन अनुसार सन्मान का अधिकारी है, उच्च जीवन रखने वाला और भी अधिक सन्मान का अधिकारी है।

हमारे मत वा विचार अलग होने से, हमारी राए भिन्न होने से किसी भी सेवक या किसी बड़ी श्रेणी के कर्मचारी का सन्मान हमारे भीतर कम नहीं होना चाहिए। यदि यह सन्मान कम होता है तो वह सेवक के लिए और समाज के लिए घातक है।

सेवक के प्रति सद्भाव, सन्मान, बोलचाल, मिलना जुलना सदा कायम रहना चाहिए। सन्मान हीन फासला और दूरी अति - हानिकारक है।

गुरु महाराज मनुष्य प्रकृति के पूर्ण बोधी होकर आरम्भ से ही अपने सेवकों को उक्त सच्चाई से ख़बरदार करते रहे हैं। उनकी इस विषय पर महां ठोस और अत्यन्त विशेष देव वाणियां मौजूद हैं, जिनका बार बार प्रार्थना पूर्वक पाठ हमारी आंखें खोलने के लिए आवश्यक है।

"जो आत्मा जहां तक गूढ़ रूप से मेरे साथ जुड़ा हुआ है, वहां तक उसके लिए आवश्यक है कि वह कुल ऐसे जनों को जो मेरे साथ जुड़े हुए हैं जिन पर जहां तक मेरा अधिकार हो चुका है, इज्ज़त और मुहब्बत की निग़ाह से देखे और अपने आपको उनका और उन्हें अपना समझे, परन्तु जिसकी ऐसी गति नहीं वह मेरा नहीं हो सकता।"

देवात्मा के प्रत्येक छोटे वा बड़े सेवक सेविका को इस देवबाणी को सदा सामने रखना चाहिए, तभी उनकी सुरक्षा की कुछ आशा हो सकती है। इससे आगे देवात्मा ने अपने प्रचारक जनों की नायाब रहबरी के लिए अपनी और अद्वितीय वाणी प्रदान की है, क्योंकि देवात्मा साफ देखते थे कि मनुष्य प्रचारक होकर भी धतूरे का पेड़ रहता है। उसे अपनी अति ज़हर भरी विरासत से मुक्त होने की आवश्यकता है, नहीं तो वह अपना शत्रु अपनों का शत्रु और मिशन का भी खुशी खुशी शत्रु बन सकता है। उसकी मनुष्य प्रकृति उसे यह समझने ही नहीं देती। ऐसी भयानक अवस्था से बचाने के लिए यह कमाल की देव वाणी है: -

"जिन्होंने अपने आपको मेरे मिशन के लिए भेंट करके, मेरी खुशख़बरी के प्रचार और आत्माओं के उद्धार और उनको मेरे साथ जोड़ने का व्रत लिया हो, उनके लिए यह विशेष रूप से आवश्यक है कि वह अपनी पुरानी विकारयुक्त और अपवित्र अवस्था से पूर्ण मुक्ति प्राप्त करके इस बात का सबूत दें कि वह - - - मेरे बाद कुल प्रचारकों को प्रेम करते हैं और

उनके साथ किसी प्रकार का द्वेष या इर्षा भाव नहीं रखते और किसी को अपने से बेहतर और उन्नत होता देखकर कुढ़ते नहीं बल्कि खुश होते हैं और अपने नाम या पद या आराम या किसी और बात को मुख्य रखकर मिशन की सच्ची महिमा और उसके प्रबन्ध के सम्बन्ध में कोई खराबी या विघ्न पैदा नहीं करते।"

प्रचारक होकर मनुष्य को ईर्षा, द्वेष और नीच घृणा के महा भयानक, अति ज़हरीले और महा घातक भावों से मुक्त होना आवश्यक है, इन भावों से वह एक तरफ अपने साथी सेवकों के प्रति दोष पूर्ण व्यवहार करेगा और गुरु का भी अनादर होगा। सुख अनुरागी मनुष्य बेहद दुर्बल है। उसकी दुर्बलता की कोई सीमा नहीं। यदि मनुष्य के अहं सम्बन्धी भाव घमंड, नीच घृणा, स्वार्थ, ईर्षा और द्वेष बढ़ जाएं, तो ऐसा मनुष्य अति आत्मघाती बम्ब का रूप धारण कर जाता है। वह अपना, दूसरों का और सबसे बढ़कर मिशन का नाश करता है।

कोई आठ पापों का त्यागी और देवात्मा का सच्चा सेवक है, या सेवक हैं, उन्होंने उच्च संगत द्वारा लगातार लाभ उठाया है और मिशन में लगातार एक या दूसरे काम आते हैं, वह अपने कई दुनियावी सुख स्वाद, यहां तक कि नौकरियों आदि का त्याग करते हैं और अपनी उमर का बहुत सा भाग मिशन का काम करने में गुज़ारते हैं। वह मिथ्या और पाप छुड़ाने का संग्राम करते हैं। वह गुरु की खुशखबरी और पैगाम फैलाने का काम करते हैं। उनके संग्राम से उच्च परिवर्तन पैदा होने का काम होता है। साहित्य फैलता है। दान आता है, आत्माएं सचमुच लाभ प्राप्त करती हैं। किन्हीं जनों में यदि घमंड, घृणा, ईर्षा, द्वेष के भावों के बदक़िस्मती से बढ़ जाने से, ऐसे गुरु मिशन में योगदान देने वालों के प्रति सन्मान, सत्कार रखने के स्थान पर, वह उन्हें साथी सेवक समझने से ही इन्कार करने लगेंगे तो वह अपनों से हाथ धोकर बिगाने बना लेंगे। ऐसा करके अपने आपको पूर्ण ठीक विश्वास करेंगे।

इसलिए साथी सेवकों के प्रति सच्चे सन्मान से खाली मनुष्य देवात्मा के प्रति सच्चे सन्मान से खाली हो जाता है। यदि कोई ऐसा मनुष्य उच्च पदों पर पहुँच जाता है, या प्रबन्ध विषयक अधिकार प्राप्त करता है, इससे वह क्या क्या भयानक अपने और मिशन के लिए परिणाम पैदा कर सकता है। इसका अनुमान मात्र ही रूह को कंपा देता है।

देवात्मा ने फरमाया है कि "देव धर्म का सबसे बड़ा और मुख्य उद्देश्य यही है कि पहले आप देव धर्म प्रवर्तक के साथ अपने सम्बन्ध को जीवन्त रूप से स्थापन करने की आवश्यकता को अनुभव करो।" देव धर्म में देवात्मा का सम्बन्ध सर्व प्रथम आवश्यकता है। देवात्मा के प्रति सच्चे विश्वास और श्रद्धा की उत्पत्ति और उन्नति की बेहद आवश्यकता है, जिससे देवात्मा के प्रति सम्बन्ध की उत्पत्ति हो सकती है।

देवात्मा के प्रति श्रद्धा की उत्पत्ति और उन्नति के लिए देवात्मा के विशेष श्रद्धावान और उनके मिशन के भीतर उच्च भावों से त्यागी, सेवाकारी होने वाले सेवकों के प्रति श्रद्धा और सन्मान होना अति आवश्यक है। जो उक्त श्रद्धावानों , गुरु मिशन में त्याग और सेवा करने वालों के प्रति सन्मान नहीं रख सकता और उन्हें उल्टे घृणित रूप में देखता है, उसके भीतर देवात्मा के प्रति श्रद्धा पैदा ही नहीं हो सकती और वह देवात्मा के साथ सच्चा सम्बन्ध स्थापन नहीं कर सकता। इस सम्बन्ध में देवात्मा ने तीसरे पूजनीय देव शास्त्र में फरमाया है: -

"देवात्मा के देव ष्प के सम्बन्ध में सच्ची श्रद्धा के उत्पन्न होने पर उनके ऐसे प्रत्येक श्रद्धावान जन में उनके ऐसे सब सच्चे श्रद्धावान जनों के प्रति भी

सन्मान भाव का होना अनिवार्य है, कि जो सारी उमर उनके देवरूप के सच्चे विश्वासी और उनके देवरूप के प्रति श्रद्धावान रहे हों, और ऐसे जनों में से उन जनों के प्रति और भी अधिक सन्मान भाव रखना अनिवार्य है, कि जिनमें देवात्मा के सम्बन्ध में श्रद्धा भाव के भिन्न कृतज्ञता और उनके परम लक्ष्य में सेवा विषय किसी भाव की उत्पत्ति और उन्नति भी हुई हो और जिन्होंने अपने आत्मा में इन सात्विक भावों की वर्तमानता का भली भांत प्रमाण दिया हो।"

देवात्मा के प्रति सन्मान, श्रद्धा की उत्पत्ति के लिए, देवात्मा के सच्चे श्रद्धावान के प्रति और उनके मिशन के भीतर सच्चे सेवाकारियों के प्रति सन्मान श्रद्धा का होना अति आवश्यक है।

इसके लिए साथी सेवक के प्रति सन्मान को मामूली वस्तु नहीं समझना चाहिए। इसके साथ साथ देवात्मा का सन्मान व सम्बन्ध भी जुड़ा हुआ है। हम किसी भी साथी सेवक को तुच्छ या हेय समझने से सदा भयभीत रह सकें और उनको उल्टे रूप में देखने के आत्मघाती मार्ग से बच सकें।

देवात्मा तो सेवकों से यह मांग करते हैं कि वह अपने दुश्मनों का भी भला करें, इससे जो साथी सेवकों को ही दुश्मन के रूप में देखेगा, उसका देवात्मा पर क्या प्रभाव पड़ेगा, यह हम अच्छी तरह समझ सकते हैं। सन्मान, श्रद्धा ही हमारी दृष्टि सीधी रख सकती है, नहीं तो हमारे नीच भाव अवश्य हमारी उल्टी दृष्टि बना देते हैं। हम उल्टी दृष्टि के महा भयानक और आत्मघाती मार्ग से सदा सुरक्षित रह सकें और साथी सेवकों के प्रति अपने सन्मान, श्रद्धा के भावों को प्रफुल्लत करके देवात्मा की निकटता प्राप्त कर सकें।

बलदेव सिंह

जीवन प्रसंग

बीमार बच्चों के लिए दुआ करते थे, लोगों ने इन्हें पादरी बना दिया

ली जॉन्ग का बेटा जन्म से ही सेरेब्रल पाल्सी का शिकार था। डॉक्टरों ने यह भी बताया था कि दिमाग में ट्यूमर है। एक महीने से ज्यादा नहीं बचेगा। ली ने उसके सिराहने बैठकर प्रार्थना करनी शुरू कर दी। अस्पताल में ही उन्हें ऐसे कई बीमार बच्चे मिले, जिन्हें देख वे द्रवित हो गए। उन्होंने उन बच्चों के बिस्तरों पर जाकर प्रार्थनाएं करनी शुरू कर दी। प्रार्थनाओं का असर हुआ। ली का बेटा बच गया। डॉक्टर झूठे साबित हो गए, लेकिन एक गलत इंजेक्शन की वजह से बच्चा जिंदगी भर के लिए पैरालाइज्ड हो गया। 14 साल तक इलाज चला, लेकिन डॉक्टर नाकामयाब रहे। 14 साल प्रार्थनाओं का सिलसिला भी चलता रहा। लोगों ने ही अब तो उन्हें पादरी मानना ही शुरू कर दिया था। एक दिन जब वे एक वॉर्ड में जाकर बीमार बच्चों से मिल रहे थे तभीएक बुजुर्ग महिला ने उन्हें अपनी पोती को गोद में देकर पालने के लिए गुजारिश की। ली कुछ देर तक सोचते रहे फिर हामी भर ली। एक सप्ताह बाद उस महिला की मौत हो गई। 2007 में एक रात करीब 3.20 बजे उनके पास एक महिला ने फोन किया। बोली - मुझे माफ कर दीजिएगा। मैं अपनी बेटी आपके पास छोड़कर जा रही हूं। इसका ख्याल रखिएगा। ली बाहर आए तो बच्ची मिली। 2009 में ली ने अपने घर के बाहर ड्रॉप बॉक्स लगा दिया, जहां लोग अपने बच्चे छोड़कर जा सकते हैं।

भगवान देवात्मा का एक उपदेश

मनुष्य आत्माओं में उल्टी दृष्टि की उत्पत्ति क्योंकर होती है? अर्थात् वे आत्मिक जीवन के सम्बन्ध में सत्य को मिथ्या और मिथ्या को सत्य किस तरह देखते हैं?

मनुष्यात्मा नीच सुखों का अनुरागी होने के कारण जहां एक ओर देव ज्योति से विहीन होता है वहां दूसरी ओर वह आत्मा और आत्मिक जीवन विषयक नाना सत्यों के देखने के न केवल अयोग्य परन्तु उल्टा दृष्टा होता है, अर्थात् वह आत्मा तथा आत्मिक जीवन के सम्बन्ध में जो-जो कुछ सत्य है, उसे मिथ्या और जो-जो कुछ मिथ्या है, उसे सत्य देखता है। ऐसी दशा में जब वह अपने आप को अन्धा या उल्टा दृष्टा न जानकर या न मानकर अपने अहं अनुराग के कारण अपना ही पक्षपाती बन जाता है, तब नेचर के अटल नियमानुसार उसके लिए उल्टे रास्ते पर जाना अर्थात् पथ भ्रष्ट होना आवश्यक हो जाता है। जैसे यदि कोई अपने बेटे का नीच अनुरागी है तो वह अपने इस अनुराग के कारण उसका पक्षपाती बन जाता है और इसीलिए अगर उसका यही बेटा अपने ऐसे बाप से किसी ऐसे जन की कोई झूठी शिकायत भी करे, कि जिस जन के साथ उसका बाप कोई अनुराग न रखता हो, तो वह अपने बेटे की उस झूठी बात पर विश्वास कर लेगा परन्तु उसके विरुद्ध दूसरे जन की किसी सच्ची बात पर विश्वास नहीं करेगा ओर इस तरह से वह अपने इस नीच अनुराग के कारण पथ भ्रष्ट हो जाएगा और झूठ को सच ओर सच को झूठ मानेगा, और इस हालत में अपने आप को ठीक ठाक जानकर संतुष्ट रहेगा, जबकि वास्तव में वह सच्चाई पर नहीं है। इसलिए आवश्यक है कि कोई मनुष्य अपनी "मैं" या अपने किसी सम्बन्धी आदि का अनुरागी न बने, क्योंकि ऐसा अनुरागी बनने से नेचर के अटल नियम के अनुसार उसके लिए उसका पक्षपाती या तरफदार बन जाना और उसका पक्षपाती बन कर पथ भ्रष्ट होना आवश्यक है। ऐसा सम्बन्धी चाहे उसका बेटा हो या बेटी हो, चाहे उसकर पत्नी हो या उसका पति हो, चाहे कोई और हो, सबके सम्बन्ध में ही नेचर का यह अटल नियम पूरा होगा, और इस उल्टी गति या अधोगति के द्वारा उसका दिल दिनों-दिन कठोर होता जाएगा और उसकी यह कठोरता जिस कदर बढ़ेगी, उसी कदर उस तक आत्मजीवन प्रदर्शक की वह विशेष ज्योति नहीं पहुंच सकेगी, कि जिसे पाकर ही कोई इस प्रकार का आत्मिक सत्य देखा जा सकता है। यह सत्य यदि किसी पर प्रकाशित हो सके, तो सम्भव है उसकी आत्मक भलाई का बन्द रास्ता खुल सके। लेकिन यदि वह अपने नीच अनुरागों के नीचे बहुत अधिक दब चुका है तो उस दशा में उसका उसी तरह उभरना या ऊपर को आना असम्भव है जिस तरह मिट्टी की बहुत मोटी तह के नीचे दब जाने से किसी बनस्पति के बीज के अन्दर से कोई अंकुर नहीं फूट सकता।

कोई नौजवान धन का अनुरागी है, और वह अपने इस अनुराग के कारण नेचर के अटल नियमानुसार उसका पक्षपाती बन गया है। इस पतित हालत में वह इस आत्मिक सच्चाई को नहीं देख सकता कि जो नौजवान आप खाने कमाने की योग्यता रखता हो, उसे अपने बाप की कमाई पर कोई दान्त नहीं रखना चाहिए और जो रुपया और जायदाद उसके बाप की है, उसे अपने अधिकार में लाने का उसे विचार तक न

करना चाहिए। ऐसा चाहना जैसे आत्म-सम्मान के बिल्कुल विरुद्ध है, वैसे ही सत्य धर्म की शिक्षा के भी बिल्कुल विरुद्ध है। मगर वह नौजवान धन और सम्पति का नीच अनुरागी बन कर इस सत्य को नहीं देखता, और उस सत्य को स्वीकार नहीं करता। हमने अपने बचपन में अपने पिता जी से यह दोहा सुना था-

"चल्यो भलो न कोस को, दुहिता भली न एक
मंगियो भलो न बाप से, जो प्रभु राखे टेक"

इसका सही और स्पष्ट अर्थ यह है कि पैदल चलना एक कोस का भी अच्छा नहीं, बेटी एक भी अच्छी नहीं, मांगना बाप से भी अच्छा नहीं, यदि प्रभु सहायता करें। इस दोहे में से यह बात कि जब तुम अपनी सहायता आप करने के योग्य बन गए हो तब तुम्हें अपने पिता से भी कुछ लेना या मांगना ठीक नहीं, बिल्कुल सही है। हमें इस नियम की सच्चाई नौजवानी की आयु में ही नज़र आ गई थी। इसलिए हमने अपनी लगभग 18 साल की आयु के बाद अपने माता-पिता की और नाना सेवा करने के भिन्न धन से भी उनकी बराबर सेवा की लेकिन उस आयु के बाद से अपनी आवश्यकताओं के लिए हमने उनसे कभी कुछ नहीं मांगा और कभी नहीं लिया और ऐसा करना हमने अपने आत्म सम्मान और आत्म सहाय और आत्म निर्भर के विरुद्ध समझा, और यही नियम हमारे सामने रहा है कि किसी परोपकार के काम के लिए तो हम किसी से एक पैसा तक भी मांग सकते हैं, लेकिन अपने लिए किसी से कुछ नहीं मांग सकते। इस सत्य आत्मिक नियम के अनुसार किसी असहाय और सचमुच की सहायता के मोहताज जन के लिए तो किसी से मदद चाहना बेशक उचित है, परन्तु जो स्वयं खाने कमाने के योग्य हो, उसे अपने बाप से भी धन या सम्पत्ति चाहना किसी तरह भी उचित नहीं। मगर जो बेटा धन अनुरागी बन जाता है, वह इस आत्मिक सत्य को नहीं देखता। परन्तु इसके उल्ट अपनी इच्छा की तृप्ति करने वाली बात को सही और उचित और दूसरी सच बात को ग़लत और अनुचित मानता और प्रकट करता है। इसी तरह जब कोई बाप अपने बेटे का अनुरागी बन जाता है, तब वह भी इस सच्चाई को नहीं देखता, और उसे स्वीकार नहीं करता कि उसकी अपनी कमाई हुई सम्पत्ति उसकी अपनी समाज या उसके देश आदि के भले के लिए काम में आनी चाहिए, बल्कि वह उल्टा दृष्टा होकर सच को झूठ और झूठ को सच देखकर यह चाहता है कि उसकी सब सम्पत्ति उसकी सन्तान के पास जानी चाहिए। अब प्रश्न यह है कि ये बात और बेटे इस प्रकार की उल्टी दृष्टि क्यों रखते हैं? वे झूठ को सच और सच को झूठ क्यों देखते और मानते हैं? इसलिए कि जहां एक ओर बाप सन्तान अनुरागी है, वहां दूसरी ओर उसकी सन्तान धन अनुरागी बन गई है।

अब यह सच्चाई हमें तो युवा होने से पहले ही नज़र आ गई और हमने अपने जीवन में इस पर बखूबी अमल किया। लेकिन हमारे दो बेटों को यह सच्चाई नज़र न आई। हमें इस बात से बहुत दुःख अनुभव होता है कि औरों के अतिरिक्त जिन के साथ हमारा पुराना सम्बन्ध हो, वे अपने नीच अनुरागों के बढ़ने के साथ-साथ ऐसी आत्मिक कठोरता की हालत में पहुंच जाएं कि वे अपने आत्मिक जीवन के सम्बन्ध में हमारी प्रकट की हुई किसी उच्च सच्चाई को देखने के योग्य न रहें, और वह अपने बढ़े हुए अहं अनुराग के कारण सत्य को मिथ्या और मिथ्या को सत्य देखकर पतन का रास्ता स्वीकार करें।

धन के नीच अनुराग के बढ़ जाने से एक-एक जन केवल यही नहीं कि अपनी आत्मिक

कठोरता को बढ़ाकर किसी एक दूसरी आत्मिक सच्चाई को नहीं देख सकता और उसका पक्षपाती नहीं बन सकता, बल्कि उसके विपरीत वह झूठ की जिस कदर महिमा देखता और उसका जिस कदर पक्षपाती बन जाता है, उसके सम्बन्ध में लगभग पचास साल पहले की एक घटना हमे इस समय याद आ गई है। हम एक बार अमृतसर गए हुए थे। वहां पर दरबार साहिब के निकट देशी वस्तुओं की एक दुकान थी। हम इस दुकान पर गए। वहां कई वस्तुओं को दिखाते हुए इस दुकान के मालिक ने अपनी बात चीत के दौरान बहुत गर्व से हमसे कहा कि जब कई अंग्रेज़ लोग हमारी दुकान पर आकर कई ऐसी वस्तुओं के बारे में पूछते हैं, कि वे कहां कि बनी हुई हैं और हमें पता नहीं होता कि वे कहां की बनी हुई हैं, तब हम यूं ही कह देते हैं कि यह अलीगढ़ की बनी हुई है या यह आगरा की बनी हुई है आदि।

इस पर हमने उसे कहा कि इस तरह झूठ बोलना बहुत बुरा है। तुम जो कुछ सच हो, वही बताया करो क्योंकि झूठ आत्मा के लिए घातक विष है। वह कहने लगा - के झूठ के बिना हमारा काम नहीं चल सकता। हमने कहा ऐसा नहीं है, बल्कि सच्चाई से भी मनुष्य को रोटी मिल सकती है। इस पर उसने कहा हां मिल तो सकती है, लेकिन चुपड़ी नहीं मिलती, सूखी मिलती है। उस समय हमने स्पष्ट देखा कि हमारी सच्चाई की अपील उसके लिए किसी काम की प्रमाणित न हुई और हमारी ज्योति उस तक न पहुंची और वह सत्य की आवश्यकता और उसकी महिमा को न देख सका, और उसे ग्रहण न कर सका। सत्य को सत्य के रुप में देखने के लिए जो रोशनी हमारे भीतर थी, वह रोशनी उसमें न थी। वह उस रोशनी से पूर्णत: खाली था। उसका आत्मा धन अनुराग के कारण सख़्त कठोर हो चुका था और इसलिए वह उस सच्चाई को न देख सका कि जो हम उसे दिखाना चाहते थे।

आत्मिक जीवन के सम्बन्ध में नाना प्रकार की सच्चाईयों को देखने के लिए जो देव ज्योति हम में विकसित हुई है, वह देव ज्योति और किसी में नहीं है। अब जो जन स्वयं इस देव ज्योति से विहीन है, वह यदि हमसे विमुख होकर हमारी इस ज्योति के पाने के योग्य न रहे तो वह केवल अपनी किसी मानसिक शक्ति के द्वारा उन सच्चाईयों में किसी सच्चाई को नहीं देख सकता और यदि वह अपने अहं अनुराग आदि किसी नीच अनुराग की उकसाहट से अपना पक्षपाती बनकर हमारी रोशनी का बराबर निरादर करता रहे और हमसे बेमुख बन जाए तो नेचर के अटल नियमानुसार वह इस शोकप्रद रास्ते पर चल कर अधिक से अधिक पथ भ्रष्ट और पतित होता जाएगा।

देवात्मा फरमाते हैं

*** लोगों की दिलों में बेहद घमंड भरा हुआ है, उनके भीतर किसी भलाई के काम या उसके करने वालों के लिए कोई सन्मान या लिहाज पाया नहीं जाता।**

*** धर्म की सोसाईटी धर्म लाने के लिए है, उसमें धर्म के नियम काम करेंगे। मकारी, राजनीति, धोख़ेबाजी वग़ैरा उसमें काम न आएगी।**

भविष्यवाणियों के आईने में नज़र आता भ्रम

आज शत्रु से सावधान रहे, एक चम्मच चीनी में दो बूंद डालकर पीपल के नीचे रखें, नीले वस्त्र पहनने से दिन सुखद रहेगा, उड़द और मूंग मिलाकर नदी, कुएं या नाले में डालें - ऐसी बातें अधिकतर चैनलों पर भविष्यफल के नाम पर प्रतिदिन प्रसारित होती हैं। अंधविश्वास और कुरीतियों के कारखाने चौबीसों घंटे उत्पाद निर्माण करते हैं, क्योंकि इनकी बाजार में मांग है। सारी फिल्मों के प्रारंभ में पूजा - पाठ किया जाता है और प्रतिदिन शूटिंग में पहला शॉट ओके होते ही नारियल का प्रसाद बांटा जाता है। फिल्म की एक रील प्रदर्शन पूर्व मंदिर या दरगाह ले जाते हैं। कैटरीना कैफ विदेश में जन्मी हैं परन्तु अजमेर शरीफ की दरगाह पर साल में कम से कम तीन बार जाती हैं।

महान भारत में यह सब होता रहा है और कभी रुक भी नहीं सकता। धर्म के भवन को जिन लोगों ने दिन में खुले दिमाग से देखा है, उन्होंने उसे हवादार और प्रकाशवान पाया है परंतु इसी भवन को रात के अंधेरे में देखने वालों को वहां अंधविश्वास के चमगादड़ उलटे लटकते नज़र आए हैं और जहां - तहां भ्रम के जाले बन गए हैं। अखबार और पत्रिकाएं भी इन सब बातों को लगातार प्रकाशित करके मजबूती देती है, क्योंकि उन्हें सत्य से अधिक लाभ अंधिवश्वास को बलशाली बनाने में मिलता है। क्या सचमुच में 'सत्य' उबाऊ है और 'झूठ' सनसनीखेज तथा मनोरंजक? हमने अपनी सुविधाअनुसार ऐसी व्यवस्था और जीवनशैली गढ़ ली है कि हम सत्य से किनारा करके चलने को ही निरापद समझते हैं। मनुष्य शरीर के सारे कार्यकलाप ही प्रकृति के आईने में उभरते हैं। हमारे अंध विश्वास पहाड़ों की शक्ल ले लेते हैं, हमारे भीतर की प्रेमहीनता रेगिस्तान रचती है और आनंद नदियों को जन्म देता है। क्या खूब लिखा है मजाजा ने, 'सिकुड़े तो दिले आशिक है, फैले तेा जमाना है, हम खाकनसीनों की ठोकर में जमाना है।'

वैज्ञानिक और साहित्यकार दोनों ही सत्य को देख पाते हैं परन्तु अभिव्यक्तियां अलहदा ढंग से होती हैं। मीडिया ने फोकस कुछ अनावश्यक और प्रसिद्ध लोगों के जीवन पर केंद्रित किया है। सलमान खान का 'बिइंग ह्यूमन ट्रस्ट' कितने लोगों का इलाज कराता है, कितने बच्चों की फीस भरता है जैसी ठोस बातों से अधिक उनके विवाह की खबरों को उछालता है। देश का शिखर कुंआरा कभी विवाह करेगा या पहले किया है तो उस 'सीता' को कौन सा वनवास दिया है, इससे अधिक महत्व सलमान के विवाह को दिया जा रहा है। ताज़ा शिगूफा है कि अपनी मौजूदा अन्यतम सखी रूमानिया में जन्मी लूलिया से सलमान 18 नवंबर शादी करेंगे।

उनके पिता सलीम खान ने भी बावन वर्ष पूर्व 18 नवंबर को ही विवाह किया था। सलमान के संभावित विवाह को राष्ट्रीय महत्व की खबर बनाया जा रहा है, जबकि अवाम विकट समस्याओं से जूझ रहा है। स्वतंत्रता - संग्राम के समय मीडिया ने देशप्रेम में किए गए त्याग की प्रेरक बातें प्रकाशित की परंतु स्वतंत्रता पश्चात उसने अपना फोकस ही बदल दिया है, जिसका कुछ दोष पाठक वर्ग को भी जाता है, जो इन्हें चटखारे लेकर पढ़ता है।

भविष्यवाणियों में रुचि लेना और विश्वास करना तथा सलमान के विवाह के प्रति जिज्ञासा रखना एक ही बीमारी के दो लक्षण हैं। 'बजरंगी भाईजान' या 'एक था टाईगर' से उनकी अभिनय क्षमता निखरी है अन्यथा उनकी सितारा अदाएं ही फिल्में सफल बनाती थीं। अब बतौर अभिनेता उनका विकास हो रहा है। इन बातों को कभी मीडिया और पाइक वर्ग महत्व नहीं देता। सभी क्षेत्रों में हमने साधन से अधिक महत्व साध्य को दे दिया है।

हमें नेता भी वैसे ही मिलते हैं जैसे नेता हमारा अंतस चाहता है। सारे संसार में ही यह 'ऑफ मीडियोक्रिटी' है। तर्क का कालखंड सुनहरा भूतकाल हो चुका है और अब फूहड़ता समय के दर्पण में दिखाई पड़ती है। मीडिया की भविष्यवाणियों को हम जी रहे है और मूर्ख लोगों के हाथ पंचाग लग गया है।

जीवन प्रसंग

नौ की उर्म से जुटा रही डोनेशन, 25 हजार बच्चों की इकलौती दोस्त

नौ साल की उम्र में जब बच्चियां गुड्डे-गुड्डियों से खेलती हैं, उसी उम्र में नेहा ने अपने सारे खिलौने बेच दिए थे, अपने कुछ ऐसे दोस्तों की खातिर जिन्हें वह अच्छे से जानती तक नहीं थी। ये वे दोस्त थे जिनसे वह एक अनाथाश्रम में मिली थी। 2005 में नेहा अपना नवां जन्मदिन मनाने अमेरिका से भारत आई थी। अपने दादा के घर। दादा उसे अनाथाश्रम ले गए। यहीं पहली बार नेहा की अनाथ बच्चों से दोस्ती हुई। इसके बाद आने-जाने का सिलसिला शुरू हो गया। यहीं पहली बार नेहा का अभावों से सामना हुआ। नेहा के ये दोस्त स्कूल नहीं जा सकते थे। अच्छा खाना कभी-कभार ही मिलता था। कपड़े तो औरों के उतरे हुए ही पहनते थे। नेहा जब वापस फिलेडोल्फिया लौटी। तो उन्होंने वहां अपने इन दोस्तों के लिए फंड जुटाना शुरू कर दिया। शुरूआत घर में ही की। अपने खिलौने बेच दिए। इसी तरह 53 हजार रूपए जुटाए। अगले साल 10वें जन्मदिन पर जब वह अनाथाश्रम लौटी। तो उसके पास 3.35 लाख रूपए थे। इन पैसों से नेहा ने अपने इन दोस्तों के लिए कपड़े, खिलौने खरीदे। पिछले नौ साल में वह भारत में एक अनाथालय और चार स्कूलों में पांच लाइब्रेरी बनवा चुकी हैं, जिसमें 15500 किताबें हैं। चार स्कूलों कम्यूटर लैब्स, एक सांइस सैंटर और 60 सिलाई मशीन का केंद्र बना चुकी हैं। 100 बच्चों की पूरी पढ़ाई भी करा रही हैं।

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने, कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। : -श्रीमान बलदेव सिंह जी

House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Phone : 0172 - 4638229,
2716914

धर्म में फंसाने का धंधा

धर्म को ईश्वर से मिलाने का माध्यम माना गया है। धर्म मोहमाया, सांसारिक सुखों के त्याग की सीख देता है। धर्मग्रंथों में धर्म की कई परिभाषाएं दी गई हैं। कहा गया है कि धर्म तो वह मार्ग है जिस पर चल कर मनुष्य मोक्ष की मंजिल तय कर सकता है। ईश्वर के करीब पहुंच सकता है। धर्म के मानवीय गुण प्रेम, शांति, करुणा, दया, क्षमा, अहिंसा को व्यक्ति जीन में उतार कर मनुष्यता धारण कर सकता है। सांसारिक सुखदुख के जंजाल से छुटकारा पा सकता है। जिस ने धर्म के इस मार्ग पर चल कर ईश्वर को पा लिया वह संसार सागर से पार हो गया।

लेकिन व्यवहार में धर्म क्या है? धर्म का वह मार्ग कैसा है? लोग किस मार्ग पर चल रहे हैं? हिंदु समाज में धार्मिक उसे माना जाता है जो मंदिर जाता है, पूजापाठ करता है, जागरणकीर्तन, हवनयज्ञ कराता है, लोगों को भोजन कराता है, गुरु को आदरमान देता है, प्रवचन सुनता है, धार्मिक कर्मकांड कराता है, जीवन में पगपग पर धर्म के नाम पर रची गई रस्मों को निभाता चलता है और इन सब में दानदक्षिणा जरूर देता है।

धर्मग्रंथ और धर्मगुरु व साधुसंत कहते हैं कि धर्म के मार्ग पर चलने के लिए ये सब करो तो बेड़ा पार हो जाएगा।

ईश्वर तक पहुंचाने वाले इस धर्म का असल स्वरूप कैसा है? हिंदू समाज में धर्म के नाम पर वास्तव में रस्मों का आडंबर है। चारों तरफ रस्मों की ही महिमा है। पगपग पर रस्में बिछी हैं। 'पीने वालों को पीने का बहाना चाहिए' की तर्ज पर धार्मिक रस्मों में नाचना, गाना, खानापीना, कीर्तन, यात्रा, किट्टी पार्टी, गपबाजी, विरोधियों की पोल खोलना, आदि शामिल हैं, हिन्दू समाज में जन्म से ले कर मृत्यु और उस के बाद तक अलगअलग तरह की रस्में हैं। अंधभक्त धर्म के नाम पर बनी इन रस्मों को बड़े उत्साह से निभाते हैं। वे इन रस्मों में उल्लास के साथ भाग लेते हैं।

विवाहशादी, जनममरण की रस्में छोड़ भी दें तो जीवन में और बहुत सारी धार्मिक रस्मों का पाखंड व्याप्त है। पाखंड से भरे रस्मों के प्रति लोगों के निरंतर प्रचार के कारण श्रद्धा बढ़ रही है।

कृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर दही हांडी फोड़ने के साथ नाचगाने व अन्य मनोरंजक रस्में महाराष्ट्र में जगहजगह होती हैं। गणेशोत्सव पर तरहतरह की झांकियां निकाली जाती हैं। इन में बच्चे वे बड़े हाथी की सूंड लगाए, देवीदेवताओं के मुखौटे चढ़ाए नाचतेगाते दिखते हैं। जागरणों कीर्तनों की धूम दिखाई देती है। इस तरह हर साल धार्मिक रस्में चलती रहती हैं। रस्मों का महाजाल बिछा है। कुछ लोग भय से, लालच से और आनंद उठाने के लिए धार्मिक रस्मों को करने में लगे हुए हैं।

धार्मिक रस्मों में पूजा कई रूपों में की जाती है। पूजापाठ के अनोखे तरीके हैं। नाचगाने, फिल्मी धुनों पर भजनों की बहार के साथ उछलतेकूदते भक्तगणों की टोलियां नाइट क्लबों की तरह करतब दिखाती नजर आती हैं। भक्त मूर्ति को प्रतीकात्मक तौर पर खाद्य सामग्री, पानी और पुष्प चढ़ाते हैं। मूर्ति के आगे मोमबत्ती या अगरबत्ती जला कर घुमाई जाती है। फिर घंटी बजाने की रस्म की जाती है। भगवान का नाम बारबार जपा जाता है। भगवान को खाने की जो चीज चढ़ाई जाती है उसे 'प्रसाद' कहा जाता है। इस 'प्रसाद' के बारे में प्रचारित किया गया है कि 'प्रसाद' खाना 'आत्मा' के लिए लाभप्रद है।

हर धर्म में तीर्थयात्रा जरूर बताई गई है। नदी के किनारे बसे शहरों की तीर्थ यात्रा पर गए लोग नदी में जलता हुआ दीपक और पुष्प रखा हुआ दोना बहाते हैं, मंदिरों में जलते हुए दीपक की लौ को सिरआंखों

पर लगाते हैं। राख या चंदन का तिलक माथे के अलावा गले, छाती, नाभि पर लगाते हैं।

ऐसा करने के पीछे कोई तार्किकता नहीं है पर लोगों को ऐसा करने के लिए फायदा होने का लालच दिखाया गया है। दोना बहाने पर सुखसमृद्धि व पतिपत्नी के रिश्ते दूर तक चलने और दीपक की लौ से रोगदोष कटने की बात कही जाती है। हां, इन्हें देखना बड़ा सुखद लगता है, दृश्य फिल्मी हो जाता है।

जागरणकीर्तन की रस्म में लोग फिल्मी धुनों पर रचे भजन गाते हैं और थिरकते हैं। परिवार सहित अन्य लोगों को आमंत्रित किया जाता है तथा सब को भोजन कराया जाता है। धर्म की कमाई नहीं आनंद, मौजमस्ती की कमाई होती है।

लोग कहते फिरते हैं कि धार्मिक रस्में बहुत सुंदर होती हैं। प्रशंसा करते नहीं अघाते कि वाह, कैसा सुदर जागरण कीर्तन था। खूब मजा आया। झांकी कितनी खूबसूरत थी यानी मामला भगवान के पास जाने का नहीं, मनोरंजन का है।

रस्मों के नाम पर कहीं सुंदर नए वस्त्र पहने जाते हैं, कहीं तलवार, लाठीबाजी के करतब भी किए जाते हैं तो कहीं जुआ खेला जाता है। शिवरात्रि पर भांग पीना भी एक रस्म मानी जाती है। भंडारा यानी खानापीना और दान की रस्में तो सर्वोपरि हैं। इन रस्मों के बिना तो धर्म ही अधूरा है। सारा पुण्यकर्म ही बेकार है। धार्मिक कार्यक्रमों में भोजन कराना बड़े पुण्य का काम समझाा जाता है। इसे प्रसाद मान कर लोगों को खिलाया जाता है। यहां भी बच्चों और बड़े भक्तों का मनोरंजन ही सर्वोपरि होता है। ऊबाऊ फीकी रस्मों के पीछे कम लोग ही पागल होते हैं।

महिलाओं को लुभाने के लिए उन्हें सजनेसंवरने के लिए सुंदर वस्त्र, आभूषण पहनने, घर को सजाने में रुचि रखने वाली औरतों के लिए घर के द्वार पर वंदनवार बांधने, कलश स्थापना जैसी रस्में भी रची गई हैं। औरतें अपनी सब से सुंदर साड़ियां पहन कर, जेवरों से लदफद कर, मोटा मेकअप कर के भगवान के सन्निकट आने के लिए घर का कामकाज छोड़छाड़ कर निकलती हैं। रस्मों के दौरान खूब हंसी ठट्ठा होता है। हाहा हीही होती है। छेड़खानी होती है। आसपास मर्द हों तो उन्हें आकर्षित करने का अवसर नहीं छोड़ा जाता।

भांग खाने, जुआ सट्टा खेलने की रस्म, गरबा खेलने की रस्म, धार्मिक उत्सवों में लाठी, तलवारबाजी की रस्में की जाती हैं। यहां भी आड़ भगवान की ले ली जाती है यानी रस्म के नाम पर नशेबाजों, जुआ सट्टेबाजों, रोमांच, रोमांस के शौकीनों को भी धर्म के फंदे में फंसा लिया गया है। होली, दशहरा, नवरात्र, शिवारत्रि जैसे धार्मिक उत्सवों पर नशा, छेड़छाड़, गरबा, डांडिया उत्सव में रोमांस के मौके उपलब्ध होते हैं।

अरे, वाह, ईश्वर तक पहुंचने का क्या खूब रास्ता है। भगवान तक पहुंचने का यह मार्ग है तभी लोगों की भीड़ बेकाबू होती है।

दक्षिण भारत में धार्मिक रस्मों के नाम पर लोग लोहे की नुकीली लंबीलंबी कीलें दोनों गालों के आरपार निकालने का करतब दिखाते हैं। कई धर्मस्थलों तक मीलों पैदल चल कर जाते हैं, कुछ लेट कर पेट के बल चल कर जाते हैं। यह सबकुछ सर्कसों में भी होता है। गोदान, शैयादान करने की रस्म, बेजान मूर्तियों के आगे देवदासियों (जवान युवतियों) के नाचने की भी रस्म है। कहीं बाल कटवाने की रस्म है। कहीं मंदिरों में पेड़ों पर कलावा, नारियल, घंटी बांधने की रस्म है। कुछ समय पहले तक तीर्थों पर पंडों द्वारा युवा स्त्रियों को दान करवा लेने की परंपरा थी। शुद्धिकरण, पंडों के चरण धो कर गंदा पानी पीने की रस्म, मनों दूध नदियों में बहाने, मनों घी, हवन सामग्री को अग्नि में फूंक डालने की रस्म है। जानवरों को मार कर

खाना, देवीदेवताओं को चढ़ाना रस्म है, और यही मांस बतौर प्रसाद फिर खाने को मिलता है क्योंकि भगवान तो आ कर खाने से रहे।

अरे, भाई, यह क्या पागलपन है। क्या भगवान तक पहुंचने का मार्ग ढूंढ़ा जा रहा है या खानेपीने का लाभ होता है? शायद लोहे के सरियों से जबड़े फाड़ कर, भांग पी कर, जुआ खेल कर, नाच गाकर ईश्वर तक पहुंचने के बजाय बोरियत दूर की जाती है। चूंकि धर्म का धंधा इसी पर टिका है, पंडेपुजारियों ने इस तरह के रोमांच, रोमांस, मौजमस्ती वाली रस्में रची हैं।

रस्मों में खानेपीने यानी भंडारे और दान की रस्म का खास महत्त्व है। ये रस्में हर धर्म में हैं। बाद में खाने की अनापशनाप सामग्री चाहे कूड़े के ढेर में फेंकनी पड़े। धर्म के नाम पर खाना खिलाने की यह रस्म इस गरीब देश के लिए शर्म की बात है। जहां देश की 20 प्रतिशत आबादी को दो वक्त की भरपेट रोटी नहीं मिलती, वहां ऐसी रस्मों में टनों खाद्य सामग्री बरबाद की जाती है।

कुंभ जैसे धार्मिक मेलों में तो रस्मों के नाम पर बड़े मजेदार तमाशे देखने को मिलते हैं। पिछले नासिक कुंभ मेले में इस प्रतिनिधि ने स्वयं देखा, रस्मों के नाम पर लोग गोदाबारी के गंदे पानी में बड़ी श्रद्धा से स्नान कर रहे थे, पुष्प, जलते दीपक का दोना नदी में बहा रहे थे। 'अमृत लूटने वाले दिन' दोपहर को जब एक महामंडलेश्वर की मंडली घाट पर आई और उस ने नदी में पैसे, प्रसाद फेंके तो भक्तों की भीड़ इस 'अमृत' को लूटने के लिए नदी में कूद पड़ी। पैसे के लिए मची, भगदड़ में कई भक्त मोक्ष पा गए।

मेले में कहीं रस्सी के सहारे बाबा लटके हुए थे, इन के आगे एक बोर्ड लगा था और उस पर लिखा था, बाबा खड़ेश्वरी। आगे एक दानपात्र पड़ा था। कहीं लाल मिर्च का ढेर लगा था और 30 मिर्चों को जला कर हवन किया जा रहा था। स्नान के लिए गुरुओं की झांकियां निकल रही थीं। भिखमंगों, अपंगों की भीड़ उमड़ी पड़ी थी। धर्म में बहुरूप धरने वालों का भी रिवाज है। मेले में तरहतरह के बहुरूपिए नजर आ रहे थे। कोई शिव, कोई हनुमान, कोई बंदर, कोई गरूड़ बना हुआ था लेकिन इन के हाथों में कटोरा अवश्य था। हर जगह ऐसा लग रहा था मानो मदारियों को जमा कर रखा है। अगर ये मदारी न हों तो कुंभ मेले में शायद कोई जाए ही नहीं।

दरअसल, रस्मों का यह एक मोहजाल फैलाया गया है। रस्मों के नाम पर इन में मौजमस्ती, रोमांच ज्यादा है। रस्में बनाई ही इसलिए गई हैं कि ज्यादा से ज्यादा लोगों को आकर्षित किया जा सके क्योंकि मस्ती, मनोरंजन, खानपान, रोमांच के प्रति मनुष्य का जन्मजात स्वभाव है।

धर्म में इन रस्मों का यह स्वरूप आदमी की कमजोरी को भांप कर धीरे धीरे निर्धारित किया गया क्योंकि ज्यादातर हिंदुओं का धार्मिक जीवन देवीदेवताओं पर केंद्रित होता है। लोग नाच कर, गा कर, खाना खाकर, तरह तरह के मनोरंजक तमाशे कर के खुश होते हैं और बहाना बनाते हैं पूजा करने का। पंडेपुजारी इस बात को जानते हैं और वे इवेंट मैनेजर बन जाते हैं।

असल में रस्में अंधविश्वासों का जाल हैं। यह संसार का एक विचित्र गोरखधंधा है। तरक्की रोकने की बाधाएं हैं। असल बात तो यह है कि धर्म के पेशेवर धंधेबाजों ने रस्मों के नाम पर जेब खाली कराने के लिए सैकड़ों रास्ते निकाल लिए हैं। भिन्नभिन्न प्रकार की चतुराई भरी तरकीबों से हर धार्मिक, सामाजिक उत्सवों पर रस्में रच दी गईं। इन रस्मों के ऊपर दानदक्षिणा, चंदा मांगने की रस्म और बना दी गई। कह दिया गया कि दान के बिना धर्म का हर काम अधूरा है। जनता अपने पसीने की कमाई में से रस्मों के नाम पर पैसा देना अपना धर्म समझती है।

हरदास परंपरा के संगीत, सूरदास, कबीर, मीराबाई के भजन आखिर हों क्यों? क्यों शब्दजाल से सम्मोहित किया जाता है। भक्तों का मनोरंजन उद्देश्य है या ईश्वर की प्राप्ति? अब इस गीतसंगीत की जगह फिल्मी मीतसंगीत ने ले ली है। अच्छा है। नए युग में नया मनोरंजन। पुराने भजनों में भक्त आकर्षित नहीं होते। लिहाजा भक्तों की रुचि का पूरा खयाल रखा जाता है और अब उन्हें 'ये लड़की आंख मारे,' 'चोली के पीछे क्या है' जैसे उत्तेजक फिल्मी गीतसंगीत पर रचे भजन गाएसुनाए जाते हैं।

धर्म के धंधेजाब लोगों में भय और लालच फैलाते हैं कि फलां रस्म न की गई तो ऐसा अनर्थ हो जाएगा व फलां रस्म की गई तो यह पुण्य होगा, इच्छाएं पूरी होंगी। सुखसमृद्धि आएगी। जन्म के बाद बच्चे का मुंडन नहीं कराया, इसलिए बच्चा बीमार रहने लगा। चाहे किसी कारणवश बच्चा बीमार हो गया हो, दोष रस्म न करना मान लिया जाता है। इस तरह के सैकड़ों भय दिखा कर लोगों को दिमागी गुलाम बना दिया गया है।

भयभीत, अनर्थ से आशंकित लोग यंत्रवत हर धार्मिक रस्म करने को आतुर हैं। चाहे जेब इजाज़त दे या न दे। कर्ज़ ले कर धार्मिक रस्म तो करनी ही है। लोग खुशीखुशी अपनी जमा पूंजी खर्च कर देते हैं, क्योंकि मुंडन पर सैकड़ों को बुला कर खाना खिलाने का अवसर मिलता है। रिश्तेदार जमा होते हैं। देवरभाभी, जीजासाली घंटों चुहलबाजी करते हैं।

घर में बच्चा पैदा हुआ है, यह बताने के लिए डाक्टरी विज्ञान है। विज्ञान पढ़ कर भी इसे भगवान की कृपा मान कर जागरणकीर्तन की रस्स की जाती है। खाना, कपड़े, गहने दान किए जाते हैं। जागरण में अंशिमांएं भरी जाती हैं। सिर नवा कर भगवान को अर्पित कौन करता है? क्या यही सब करने से भक्त भगवान का दर्शन पा जाते हैं?

हम अपने धर्म, संस्कृति को महान बताते रहे। इस की श्रेष्ठता, महानता, गुरूता का गुण गाते रहे पर दूसरी जातियों और संस्कृतियों शक, हूण, यवन, अंगरेजों ने देश में आ कर हमें सैकड़ों सालों तक गुलाम बना कर रखा फिर भी हम अपना पागलपन नहीं त्याग पाए हैं। यह सब इसी पागलपन के कारण हुआ।

धर्म में अगर रस्मों के नाम पर इस तरह के मनोरंजक तमाशे न हों तो सबकुछ नीरस, फीकाफीका, ऊबाऊ लगेगा। रस मौजमस्ती चाहने वालों की भीड़ नहीं जुटेगी। रस्मों की मौजमस्ती का धर्म की खिचड़ी में तड़का लगा दिया गया, इसलिए भक्तों को स्वाद आने लगा। आनंदरस मिलने लगा। यही कारण है कि धर्म हर किसी को लुभाता है और रस्में धर्म की जान बन गईं।

असल में धर्म का महल रस्मों के इन्हीं खंभों पर ही तो टिका है। तभी तो इस के रखवालों में जरा सी आलोचना से खलबली मच जाती है। घबरा उठते हैं वे कि कहीं असलियत सामने न आ जाए। पोल न खुल जाए। अगर धर्म मनोरंजन करने का एजेंट न बने तो धर्म बेजान, बेकार, दिवालिया सा दिखाई दे। धर्म की दुकानें सूनी, वीरान नजर आएं। क्या फिर ऐसे फीके, उबाऊ धर्म की ओर कोई झांकेगा।

जाहिर सी बात है, हर एजेंट अपना माल बेचने के लिए उसे तरहतरह से सजाएगा, संवारेगा, चांदी सी चमकती वर्क लगा कर दिखाएगा, प्रदर्शित करोगा। ग्राहकों को सब्जबाग दिखाएगा तभी तो ग्राहक आकर्षित होंगे। हिंदू धर्म में औरों से ज्यादा मनोरंजक तमाशे, रस्मों की मौजमस्ती है इसलिए यहां अधिक पैसा बरसता है। धर्म मालामाल है। यह सब मनोरंजन, मौजमस्ती न होती तो धर्म का अस्तित्व न होता। यही तो धर्म का मर्म है।

(सरिता से साभार)

जीवन प्रसंग

एक अजनबी को किडनी दे दी, इसलिए लोग इन्हें पागल कहते हैं।

30 साल की अश्वेत डॉनेल रीड को तुरंत किडनी ट्रांसप्लांट की जरूरत थी। जेल क्रेविंस्की ने कहीं सुना और वे तुरंत उसे किडनी देने पहुंच गए, जबकि वे उसे जानते तक नहीं थे। किडनी मैच कर गई। क्रेविंस्की ने किडनी दे दी और चुपचाप घर लौट जाए। तब तक उनके जीवन में सबकुछ सही था, जब तक एक अखबार ने यह घटना खबर के रूप में प्रकाशित नहीं कर दी। जैसे ही पत्नी एमिली ने खबर पढ़ी तो झगड़ा शुरू हो गया। अपनी इस हरकत से क्रेविंस्की ने दो खास दोस्त तो खोए ही, अमेरिकी मीडिया में दो विषयों में पीएचडी कर चुके और तीसरे विषय की आधी तैयारी पूरी कर उसे बीच में छोड़ चुके क्रेविंस्की लिवर का हिस्सा भी डोनेट करना चाहते थे। लेकिन, परिवार के विरोध पर इरादा बदल दिया। जब एक रिपोर्टर उनके इंटरव्यू के लिए आया तो लौटते वक्त क्रेविंस्की ने उसके सामने किडनी डोनेशन का कॉन्ट्रेक्ट रख दिया। कहा - वह चाहे तो अपने ऑर्गन डोनेशन के बदले दस हजार डॉलर ले सकता है। हालांकि, रिपोर्टर अपनी मर्जी से अंगदान को राजी हो गया। क्रेविंस्की को लोग सनकी भी कहते थे क्योंकि ऐसा कहा जाता है कि वे जहां भी जाते लोगों को अंगदान के लिए फुसलाने की कोशिश करते। रिपोर्टर जैसा ही प्रस्ताव वे कई मौकों पर और लोगों के सामने भी रख चुके थे।

मोबाइल पर अंग्रेजी सिखाती हैं, ये लाखों बच्चो की टीचर।

एक बेसिक फीचर मोबाइल भी लर्निंग का बड़ा माध्यम बन सकता है। पश्चिमी दिल्ली के एक घर में 8 साल की एक बच्ची अपने ऑटो ड्राइवर पिता के घर लौटने का इंतजार कर रही है। ताकि वह इंगिलश क्लास शुरू कर सके। मुंबई की धारावी में इसी तरह तीन बच्चे अपनी मां के मोबाइल को लाउड स्पीकर मोड पर रख इंग्लिश क्लास ले रहे हैं। वासी गोयल और कस्तूरी शाह इन दोनों परिवारों जैसे हजारों परिवारों की इंग्लिश टीचर हैं। दोनों 'हैलो, सीखे' के नाम से ऑडियो इंग्लिश एजुकेशन प्रोग्राम चलाती हैं। जिसमें कुल 6 लेवल के 65 लेसन हैं। हर लेसन 4 - 5 मिनट का। इसमें आसान हिन्दी से अंग्रेजी सिखाई जाती है। टोल फ्री नंबर 1800 - 3000 - 0881 डायल कर अपने स्तर का पाठ चुना जा सकता है। सभी लेसन प्री रिकॉर्डेड हैं। अमेरिका की प्रिंस्टन यूनिवर्सिटी में इकोनॉमिक्स पढ़ रही वासी और उसी यूनिवर्सिटी में फिजिक्स की छात्रा कस्तूरी शाह दिल्ली में एक कार्यक्रम में मिली थीं। तभी से दोनों साथ हैं। यूनिवर्सिटी में 'सीड फंडिंग कॉम्पिटिशन' के दौरान ही दोनों को फोन पर अंग्रेजी सिखाने का विचार आया। शुरूआत अक्टूबर 2013 में हुई। 'हैलो सीखो' कॉल सेवा शुरू की गई। शुरूआत अगस्त 2014 में पश्चिमी दिल्ली के झोपड़पट्टी इलाके से शुरू किया गया। तब से लेकर लाखों लोग इनसे जुड़ चुके हैं।

शुभ संग्राम

12 – 3 – 2017, रात से 15 – 3 – 2017 सुबह तक

मल्लेका (सिरसा) सुबह की सभा के बाद प्रचार पार्टी (श्रीमान बलेदव सिंह जी, श्रीमान बलबहादुर सिंह जी और श्रीमान के०सी० अग्रवाल, प्रिंसीपल सरताज सिंह जी, श्रीमान सुखदेव सिंह जी के आग्रह पर उनकी बड़ी गाड़ी में सवार होकर 5:30 बजे गंगानगर साधन स्थान पर पहुँच गए। डाक्टर मुन्शा सिंह जी पदमपुर से एक सतसंगी बंगा से पहुँच गए थे।

श्रीमान गोपाल जी, श्रीमान सुरिन्द्र जी भाटिया ने बहुत मेहनत से मन्दिर की धुलाई, बिछाई आदि की। भोजन का एक बीबी द्वारा प्रबन्ध किया गया, स्थानीय जनों को सत्संग का पता दिया गया।

पहली सभा रात को 8:30 बजे:- सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी। सभापति जी ने बताया कि मनुष्य एक सामाजिक जीव है, उसकी उन्नति और विकास समाज पर निर्भर है। मनुष्य का विकास विशेष हस्तियों के द्वारा और गति पकड़ता है। बहुत सी सामाजिक बुराईयों को विशेष विशेष योग्य जनों ने दूर किया है। परम पूजनीय भगवान ने ऐसी समाज की स्थापना की है, जिसकी पहली श्रेणी का मैंबर भी मोटे आठ पापों वा मिथ्याओं से बचने की प्रतिज्ञा करता है। समाज में कनल जी जैसी विशेष हस्ती हुई है, जिन्होंने अपनी खाने की पलेट नौकर को दे दी और खुद भूखे सोए। शारीरिक, मान्सिक, नैतिक और अध्यात्मिक विकास के लिए समाज अति आवश्यक है। देव समाज ने आदर्श प्रिंसीपल, अध्यापक, डाक्टर, वकील तहसीलदार, कर्मचारी पैदा किए, जिन्होंने समाज का विकास किया है। गुरू के प्रभाव समाज का शुद्धिकरण करते हैं नीच जनों को उच्च बनाकर समाज का विकास किया है।

13 – 3 – 2017, सुबह 9 बजे:– सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी। सभापति जी ने बताया कि नेचर के विकास क्रम में कहीं कहीं दर्दमन्दों का दर्द दूर करने के लिए उच्च हस्तियां पैदा होती हैं। वह मानवता का किसी न किसी पक्ष में दुख दर्द महसूस करके तड़प उठती है और उसे दूर करने के लिए सिर धड़ की बाजी लगा देती हैं। बिमारों कोढ़ियों, गुलामों, दलितों, गरीबों, मज़दूरों के दुखों को इन्होंने देखा और उसे दूर करने के लिए हर प्रकार का त्याग किया। एक 2 पक्ष में मानवता को दुख से बचाकर सुखी किया।

इसी विकास क्रम में देवात्मा प्रगट हुए, उन्होंने मानव रूहों को मरते देखा और तड़त उठे। आत्मा की हानि और मौत का दुख किसी हस्ती ने आजतक नहीं देखा था। जब मनुष्य अपने किसी सम्बन्ध में चाहे वह सम्बन्ध माता-पिता, भाई बहन, पति पत्नि का हो, उसमें अनुचित व्यवहार करता है, तो परम पूजनीय भगवान चारों जगतों से जुड़े होने के कारण तड़पते है, दर्द महसूस करते हैं। ऐसे व्यवहारों से मनुष्य अपने आत्मा को मारते हैं। सभापति जी ने पति पत्नि के जीवन को लक्ष्य को स्पष्ट किया। यह लक्ष्य है कि एक दूसरे को नीच जीवन से निकालने और उच्च जीवन पैदा करने में परस्पर सहायकारी होना है। जो जीवन साथी को सेहत, बुद्धि, विद्या और स्वभाव बेहतर नहीं करता, वह झूठा सम्बन्ध है। पति परमेश्वर नहीं, न पत्नी पैर पैर की जूती है। दोनों के अधिकार बराबर हैं। एक दूसरे के प्रति वफादार रहकर इस सम्बन्ध को परस्पर के विकास में लगाना है। एक दूसरे के दुख,

सुख को अपना जानना है। सभापति जी ने इस सम्बन्ध में देव प्रभावों द्वारा जो हुए सुन्दर कारज का हृदय स्पर्षीय उदाहरणों से वर्णन किया। श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने भी एक सुन्दर उदाहरण का वर्णन किया। बहुत प्रभावशाली वातावरण बना।

13 – 3 – 2017 रात 8:30 बजे: - सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी। सभापति जी ने बताया कि अन्धेरा क्या होता है। भौतिक रोशनी के न होने से अन्धेरा होता है। मानसिक रोशनी के बिना मानसिक अन्धेरा पैदा होता है जिससे सचाईयों को समझना कठिन है। धन का प्यार, लालच, रिश्तों में अन्धेरा पैदा करते हैं, दूसरों के हकों का अपहरण करते हैं। नैतिक और अध्यात्मिक अन्धेरे में ही सब बुराईयां पैदा होती है। इसकी उदाहरणें पेश की। हमदर्दी के बिना दूसरों का दुख नज़र नहीं आता। सन्मान, श्रद्धा के बिना कोई महान नज़र नहीं आता, उल्टा मनुष्य अपमान मूलक व्यवहार देता है।

श्रीमान बलदेव सिंह जी ने बताया कि मनुष्य आम तौर पर चार पक्षों में अन्धेरे में रहता है। दूसरों के गुणों, दूसरों के उपकारों, दूसरों के दुखों, और अंह को देखने के विचार से अन्धेरे में रहता हैं। अहं प्रेम अपनी कमियां और ग़ल्तियां देखने नहीं देता। भगवान के प्रभाव ही मनुष्य का अन्धेरा दूर करते हैं और सुन्दर जीवन प्रदान करते हैं।

14 – 3 – 2017, सुबह 9 बजे: – सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी। सभापति जी ने चारों जगतों के विकास का ज़िक्र करते हुए बताया कि विकास क्रम में एक एक जन ऐसी नई बात ढूंडता है जो पहले इतिहास में किसी ने न देखी हो। विकास क्रम में अर्विभूत होकर परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने बिल्कुल निराली और नई सचाईयां बताई हैं। दुनियां के किसी धर्म में प्रभावों का महत्व नहीं समझा जाता। नीच प्रभावों के परिणामों को उदाहरणों द्वारा बताया गया। उच्च आत्माओं के उच्च प्रभाव होते हैं और देवात्मा के देव प्रभाव अपना अनोखा काम करते हैं। पहली विशेषता इन देव प्रभावों की है कि अधिकारी मनुष्यों का ध्यान अपनी ओर जाता है। दूसरा धर्म सम्बन्धी मिथ्या विश्वासों का ज्ञान मिलता है, तीसरा मोटे मोटे पाप बुरे रूप में दिखने लगते हैं और उनसे निजात मिलती है। यदि योग्यता हो तो कुछ उच्च भाव पैदा होते हैं पांचवा सम्बन्धों में कुछ न कुछ सुमेल आता है। छटा - कुछ न कुछ सेवा का काम करने के मनुष्य योग्य बनता है। इससे आगे यदि यथेष्ट मात्रा में प्रभाव मिलें तो अंह घटना आरम्भ होता है, जिससे मनुष्य की रसाई देव प्रभावों तक होने लगती है। अगर निरन्तर देव प्रभाव मिलते रहें तो अहं सम्बन्धी और नीच अनुराग घटते हैं और अपना आप नीच अनुरागी अनुभव होने लगता है। घृणाकारी रूप सामने आता है देव स्तोत्र, मूल वाक्य, देव आरती के भीतर जो देवरूप निहित है, उसके कुछ दर्शन होते हैं, और आत्म बोध की प्राप्ति का मार्ग खुल जाता है। देवरूप की सुन्दरता नज़र आने लगती है। देवरूप के प्रति विश्वास, श्रद्धा, कृतज्ञता, यदि सम्भव हो तो आकर्षण भाव फूटने आरम्भ हो जाते हैं। योग्यतानुसार नीच जीवन से मोक्ष, विशेषकर स्वार्थ से मोक्ष और उच्च जीवन के विकास का क्रम आरम्भ हो जाता है। विशुद्ध परोपकार की भावना विकसित होती है। इस प्रकार प्रभावों का महत्व केवल देव धर्म में बताया जाता है और किसी धर्म में नहीं।

14 – 3 – 2017, रात 8:30 बजे: - सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी। लगभग 65 - 70 आदमियों की हाज़री थी। सभापति जी ने बताया कि विश्वास कर लेना धर्म नहीं। धर्म उच्च व्यवहारों का

Regd. Postal No.CHD (0077) 2015-17
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

नाम है। बुरे विचार की चिन्ता भी हानिकारक है। हमारे माता पिता, बहन भाई, अनेकों सम्बन्ध हैं। उनमें हमारे अच्छे व्यवहार हमें धर्मी बनाते हैं, बुरे व्यवहार हमें पापी बनाते हैं। सम्बन्ध जोड़ने की वस्तु है, तोड़ने की नहीं। गुरू महाराज ने सब सम्बन्धों में शिक्षा दी है। प्रत्येक सम्बन्ध में कर्तव्य कर्म वा वर्जित कर्म बताए हैं। नौकर मालिक तक के सम्बन्ध में आदेश हैं। फिर दीवान साहिब ने एक पति पत्नी के गुणों का वर्णन किया।

श्रीमान बलदेव सिंह जी गुरू महाराज के माली गयादीन और रसोई में खाना बनाने वाले पंडित सन्तराम जी को कैसे सम्मानित किया यह बताया गया। गुरू महाराज के ऐसे देवभावों का दृष्टान्त सबके हृदयों को झुका रहा था।

15 – 3 – 2017, सुबह 9 बजे:- सभापति जी श्रीमान बलदेव सिंह जी। सभापति जी ने पिछले दिन की सभा के सन्दर्भ में बताते हुए फरमाया कि सारी मानवता, उच्च योग्यताएं रखने वाले, पीर पैगम्बर, गुरू सब के सब आत्मिक रोगी हैं। रोगी रहने के लिए बेबस हैं। यदि रोगों को जान भी लिया जाए तो भी उनको समझना महा कठिन है। आत्मिक रोग एक आग की तरह हैं, जो अस्तित्व को तड़पाने और उसको पूर्ण रूप से नष्ट करने का काम करती है। रोग, दुख, नाश, करूपता और दुर्बलता लाते हैं। चोर, डाकू, शराबी, कबाबी, बदचलन होकर भी अपने आपको रोगी नहीं समझते। शरीफ कहलाने वालों को आत्मिक रोगों को समझना और भी कठिन है। इन आत्मिक रोगों में अहंHydro-headed-Monster है। स्वार्थ अहं का महा भयानक भाव। दूसरे नम्बर पर मनमुखता है, तीसरे नम्बर पर अहंकार है (4) गुस्सा वा नीच घृणा है, मान बड़ाई, प्रशंसा, ईर्षा द्वेष आदि हैं। बच्चा बच्चा इसमें ग्रस्त है। इससे अगले रोग शरीफों के है। काम वासना, धन पदार्थों का अनुचित मोह, सम्बन्धियों का बन्धन, आलस्य आदि रोग हैं। इन आत्मिक रोगों की भीष्णता दिखाने के लिए देवात्मा प्रगट हुए हैं। मानवता के महा सौभाग्य हैं कि देवात्मा प्राप्त हो गए । उनसे सम्बधित होकर आत्मिक रोगों से मुक्ति प्राप्त हो सकती है।

सभापति जी ने सारी हाजरीन का धन्यवाद किया। श्री सुशील कुमार जी ने जो महोत्सव पर भी पधारे थे, सबको लड्डू बांटे। डाक्टर मन्शा सिंह जी, गोपाल जी और अग्रवाल साहिब जी ने बहुत कष्ट उठाकर पार्टी की सेवा की।

एक हाजरीन

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर म. न. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts